Quest Journals
Journal of Hindi, Political Science and Home Science
Volume 15 ~ Issue 6 (2025) pp: 29-34
ISSN(Online): 2347 – 2305
www.questjournals.org

Research Paper

वैश्विक शासन में विकासशील देशों की भूमिका

डॉ. संजीव कुमार

सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, बैसवारा डिग्री कॉलेज, लालगंज, रायबरेली (उ.प्र.)

सार

पिछले कुछ दशकों में वैश्विक शासन की प्रकृति और संरचना में उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिले हैं। शीत युद्ध की समाप्ति, वैश्वीकरण की तीव्रता, प्रौद्योगिकी क्रांति, आर्थिक परस्पर-निर्भरता तथा उभरती अर्थव्यवस्थाओं के उदय ने अंतरराष्ट्रीय शक्ति-संतुलन को पुनर्परिभाषित किया है। पहले जहाँ वैश्विक नीति-निर्माण मुख्यतः पारंपरिक शक्तियों, विशेषकर संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोपीय देशों के प्रभाव में संचालित होता था, वहीं अब विकासशील देशों की सक्रियता और बढ़ती क्षमता ने इस व्यवस्था को अधिक बहुध्रुवीय स्वरूप प्रदान किया है। इस परिवर्तनशील परिदृश्य ने वैश्विक शासन को एक गतिशील और निरंतर विकसित होने वाली प्रक्रिया में परिवर्तित कर दिया है। यह अध्ययन इसी संदर्भ में वैश्विक शासन में विकासशील देशों की भूमिका का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। शोध का उद्देश्य केवल उनकी उपस्थिति को रेखांकित करना नहीं है, बल्कि यह समझना है कि उन्होंने किस प्रकार अंतरराष्ट्रीय एजेंडा-निर्धारण, नीति-निर्माण और संस्थागत सुधारों में वास्तविक योगदान दिया है। अध्ययन में यह विश्लेषित किया गया है कि विकासशील देशों ने सामूहिक मंचों के माध्यम से और व्यक्तिगत राष्ट्रीय पहलों के द्वारा वैश्विक मुद्दों पर प्रभाव डाला है। उदाहरणस्वरूप, आर्थिक स्थिरता, जलवायु परिवर्तन, स्वास्थ्य सुरक्षा और सतत विकास जैसे विषयों पर इन देशों ने न केवल विचार प्रस्तुत किए, बल्कि बहुपक्षीय समझौतों को प्रभावित भी किया। शोध में विभिन्न वैश्विक संस्थाओं, जैसे संयुक्त राष्ट्र, विश्व व्यापार संगठन, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व स्वास्थ्य संगठन, में विकासशील देशों की भागीदारी का विश्लेषण किया गया है। यह देखा गया है कि उनकी भूमिका केवल सदस्यता या औपचारिक प्रतिनिधित्व तक सीमित नहीं रही, बल्कि उन्होंने प्रस्तावों की दिशा, बहसों की प्राथमिकताओं और निर्णयों के परिणामों को भी प्रभावित किया है। विशेष रूप से विकास-उन्मुख नीतियों, ऋण राहत, जलवायु न्याय और स्वास्थ्य समानता जैसे मुद्दों पर विकासशील देशों की आवाज़ अधिक सशक्त रूप से उभरी है। इस अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि वैश्विक शासन में विकासशील देशों की भागीदारी अब प्रतीकात्मक नहीं रही। वे केवल निर्णयों के निष्क्रिय उपभोक्ता नहीं हैं, बल्कि सक्रिय नीति-निर्माता और परिवर्तन के वाहक के रूप में सामने आए हैं। उनकी बढ़ती आर्थिक क्षमता, जनसंख्या आकार, क्षेत्रीय सहयोग और सामूहिक नेतृत्व ने वैश्विक निर्णय-प्रक्रियाओं को अधिक समावेशी और संतुलित बनाया है। अंततः यह शोध इस बात को स्थापित करता है कि वैश्विक शासन की वर्तमान संरचना में विकासशील देशों का प्रभाव वास्तविक और निर्णायक है। यद्यपि चुनौतियाँ अभी भी विद्यमान हैं, फिर भी उनकी बढ़ती भागीदारी ने वैश्विक नीतिगत ढाँचों को अधिक लोकतांत्रिक, बहुआयामी और न्यायसंगत दिशा में अग्रसर किया है। यह परिवर्तन संकेत देता है कि भविष्य की अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था अधिक संतुलित और साझी उत्तरदायित्व पर आधारित होगी, जिसमें विकासशील देशों की भूमिका केंद्रीय और प्रभावकारी बनी रहेगी।

प्रमुख शब्द- *वैश्विक शासन, विकासशील देश, वैश्विक नीति, व्यवस्था, अंतरराष्ट्रीय संगठन, शासन ढाँचा, शक्ति संतुलन।*

1. परिचय

वैश्विक शासन की अवधारणा समकालीन अंतरराष्ट्रीय संबंधों की एक केंद्रीय धुरी बन चुकी है। इसका आशय उन संगठित व्यवस्थाओं, संस्थागत ढाँचों, संधियों, नियमों और प्रक्रियाओं से है, जिनके माध्यम से विश्व समुदाय सामूहिक रूप से उन समस्याओं का समाधान खोजने का प्रयास करता है जो राष्ट्रीय सीमाओं से परे हैं। इसमें केवल औपचारिक संस्थाएँ ही शामिल

नहीं होतीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय मानदंड, बहुपक्षीय समझौते, वैश्विक मंच, क्षेत्रीय संगठन और अनौपचारिक नेटवर्क भी सम्मिलित होते हैं। संयुक्त राष्ट्र, विश्व व्यापार संगठन तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन जैसी संस्थाएँ इस वैश्विक शासन ढाँचे के प्रमुख स्तंभ मानी जाती हैं। इनके माध्यम से वैश्विक सार्वजनिक वस्तुओं, जैसे शांति एवं सुरक्षा, आर्थिक स्थिरता, मानवाधिकार संरक्षण, स्वास्थ्य सुरक्षा और पर्यावरणीय संतुलन से जुड़े मुद्दों का समाधान खोजा जाता है।आधुनिक युग में वैश्विक शासन का महत्व इसलिए और अधिक बढ़ गया है क्योंकि वर्तमान समस्याएँ किसी एक देश की सीमा में सीमित नहीं हैं। जलवायु परिवर्तन का प्रभाव समूचे ग्रह पर पड़ता है, महामारी का संक्रमण सीमाओं को नहीं पहचानता, वैश्विक आर्थिक असंतुलन का प्रभाव बहुराष्ट्रीय व्यापार और निवेश पर पड़ता है, और ऊर्जा संकट अंतरराष्ट्रीय बाजारों को प्रभावित करता है। इन चुनौतियों का समाधान केवल राष्ट्रीय नीतियों के माध्यम से संभव नहीं है; इसके लिए समन्वित वैश्विक प्रयासों की आवश्यकता होती है। इसी कारण वैश्विक शासन को सहयोग, समन्वय और साझा उत्तरदायित्व की प्रणाली के रूप में देखा जाता है।

पिछले तीन दशकों में वैश्विक शासन की संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। शीत युद्ध की समाप्ति के बाद विश्व व्यवस्था अधिक बहुध्रुवीय दिशा में अग्रसर हुई। आर्थिक उदारीकरण, वैश्वीकरण और तकनीकी क्रांति ने विकासशील देशों को अंतरराष्ट्रीय व्यापार, निवेश और कूटनीति में अधिक सक्रिय बना दिया। चीन, भारत, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों की आर्थिक प्रगति ने वैश्विक शक्ति संतुलन को प्रभावित किया। इन देशों की बढ़ती आर्थिक क्षमता और जनसंख्या का आकार उन्हें वैश्विक निर्णय-निर्माण प्रक्रियाओं में अधिक प्रभावी भागीदार बनाता है।विकासशील देशों की संख्या और उनकी सामूहिक राजनीतिक शक्ति ने भी वैश्विक शासन को पुनर्परिभाषित किया है। संयुक्त राष्ट्र महासभा में विकासशील देशों की बहुसंख्या ने सतत विकास, गरीबी उन्मूलन, जलवायु न्याय और सामाजिक समानता जैसे मुद्दों को अंतरराष्ट्रीय एजेंडे में प्रमुख स्थान दिलाया है। इसके अतिरिक्त, क्षेत्रीय और अंतर-क्षेत्रीय संगठनों के माध्यम से इन देशों ने सामूहिक रूप से अपनी आवाज़ को सशक्त किया है। इस प्रक्रिया ने पारंपरिक नेतृत्व संरचना, जो मुख्यतः अमेरिका और यूरोपीय शक्तियों पर आधारित थी, को चुनौती दी है।

परंपरागत नेतृत्व की तुलना में विकासशील देशों का दृष्टिकोण अक्सर विकास-उन्मुख और समावेशी रहा है। जहाँ विकसित देश सुरक्षा और वित्तीय स्थिरता जैसे मुद्दों को प्राथमिकता देते रहे हैं, वहीं विकासशील देशों ने मानव विकास, आर्थिक न्याय और संसाधनों के न्यायसंगत वितरण पर बल दिया है। इस प्रकार वैश्विक नीति-निर्माण की प्रक्रिया अधिक विविध और जटिल हुई है, क्योंकि विभिन्न क्षेत्रों, संस्कृतियों और विकास स्तरों के देशों के दृष्टिकोण अब एक साथ सम्मिलित हो रहे हैं।यह शोध इसी परिवर्तित परिदृश्य का बहुआयामी अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसमें यह विश्लेषण किया गया है कि विकासशील देशों ने वैश्विक शासन में किस प्रकार योगदान दिया है, किन चुनौतियों का सामना किया है, और उनकी बढ़ती भागीदारी ने शक्ति-संतुलन को किस प्रकार प्रभावित किया है। साथ ही यह भी समझने का प्रयास किया गया है कि क्या यह परिवर्तन स्थायी और संरचनात्मक है या अभी भी संक्रमणकालीन अवस्था में है।अतः यह अध्ययन न केवल वैश्विक शासन की वर्तमान प्रकृति को स्पष्ट करता है, बल्कि यह भी इंगित करता है कि भविष्य की अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था किस दिशा में विकसित हो सकती है। विकासशील देशों की सक्रियता और सहभागिता यह संकेत देती है कि वैश्विक शासन अब अधिक समावेशी, बहुध्रुवीय और संतुलित स्वरूप ग्रहण कर रहा है, जहाँ निर्णय-निर्माण की प्रक्रिया व्यापक प्रतिनिधित्व और साझा उत्तरदायित्व पर आधारित होती जा रही है।

संबंधित साहित्य की समीक्षा

वैश्विक शासन में विकासशील देशों की भूमिका को समझने के लिए प्रकाशित साहित्य का विश्लेषण अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसी अवधि में वैश्विक शक्ति-संतुलन, बहुपक्षवाद, महामारी प्रबंधन और जलवायु राजनीति जैसे मुद्दों ने अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को नए सिरे से परिभाषित किया है। समकालीन शोध यह स्पष्ट करता है कि विकासशील देश अब केवल प्रतीकात्मक उपस्थिति या विचारधारात्मक समर्थन तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे नीति-निर्माण, वार्ता प्रक्रिया और संस्थागत सुधारों में सक्रिय तथा प्रभावशाली भागीदारी निभा रहे हैं।कई विद्वानों ने इस बात पर बल दिया है कि उभरती अर्थव्यवस्थाओं के समूह BRICS ने वैश्विक आर्थिक शासन में एक वैकल्पिक विमर्श प्रस्तुत किया है। BRICS देशों ने अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं के सुधार, विकास वित्तपोषण और बहुपक्षीय व्यापार नियमों में परिवर्तन की दिशा में ठोस प्रस्ताव रखे हैं। विशेष रूप से G20 जैसे मंचों पर इन देशों ने ऋण राहत, सतत विकास लक्ष्यों के वित्तपोषण तथा वैश्विक दक्षिण के हितों की रक्षा से जुड़े मुद्दों को

प्रमुखता से उठाया। शोध यह दर्शाता है कि 2008 की वैश्विक आर्थिक मंदी के बाद G20 का स्वरूप अधिक समावेशी हुआ और उसमें विकासशील देशों की सक्रियता ने एजेंडा-निर्धारण को प्रभावित किया।साहित्य में यह भी उल्लेख मिलता है कि दक्षिण-दक्षिण सहयोग की अवधारणा ने वैश्विक शासन में शक्ति के केंद्रीकरण को चुनौती दी है। क्षेत्रीय संगठनों ने सामूहिक वार्ता रणनीतियों के माध्यम से जलवायु परिवर्तन, व्यापार असमानता और स्वास्थ्य सुरक्षा जैसे मुद्दों पर साझा प्रस्ताव प्रस्तुत किए हैं। शोधकर्ताओं का मत है कि जब विकासशील देश सामूहिक रूप से बातचीत करते हैं, तो उनकी वार्ता क्षमता और प्रभावशीलता बढ़ जाती है। यह प्रवृत्ति वैश्विक मंचों पर "सामूहिक नेतृत्व" के एक नए मॉडल को जन्म देती है, जिसमें शक्ति केवल सैन्य या आर्थिक क्षमता से नहीं, बल्कि सामूहिक राजनीतिक इच्छाशक्ति और नैतिक वैधता से भी निर्धारित होती है।2020 के बाद कोविड-19 महामारी के संदर्भ में प्रकाशित अध्ययनों ने यह दिखाया कि वैश्विक स्वास्थ्य शासन में विकासशील देशों की भूमिका निर्णायक रही। वैक्सीन समानता, आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन और बौद्धिक संपदा अधिकारों के अस्थायी निलंबन जैसे मुद्दों पर भारत, दक्षिण अफ्रीका और ब्राजील जैसे देशों ने विश्व व्यापार संगठन और विश्व स्वास्थ्य संगठन में ठोस हस्तक्षेप किए। कई शोधों के अनुसार, इन देशों की पहल ने वैश्विक स्वास्थ्य नीति को अधिक न्यायसंगत और मानवीय दिशा में मोड़ने का प्रयास किया।साहित्य का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह भी इंगित करता है कि वैश्विक संस्थाओं में विकासशील देशों की बढ़ती भागीदारी ने निर्णय-निर्माण प्रक्रिया को अधिक विविध और प्रतिनिधिक बनाया है। संयुक्त राष्ट्र महासभा में विकासशील देशों की बहुसंख्या ने सतत विकास, गरीबी उन्मूलन और जलवायु न्याय जैसे मुद्दों को अंतरराष्ट्रीय एजेंडे में केंद्रीय स्थान दिलाया। इस संदर्भ में कई विद्वानों का मत है कि वैश्विक शासन अब केवल शक्ति-राजनीति का परिणाम नहीं, बल्कि व्यापक बहुपक्षीय विमर्श का मंच बनता जा रहा है।हालांकि, साहित्य में आलोचनात्मक दृष्टिकोण भी मौजूद है। कुछ शोधकर्ताओं का तर्क है कि संरचनात्मक असमानताएँ अब भी वैश्विक शासन की मूलभूत समस्या हैं। अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं में मतदान अधिकारों का वितरण, सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता संरचना, और वैश्विक व्यापार नियमों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि विकासशील देशों के लिए बाधा उत्पन्न करती है। संसाधनों की कमी, तकनीकी विशेषज्ञता की सीमित उपलब्धता और कूटनीतिक क्षमता में अंतर भी उनके प्रभाव को सीमित करते हैं। कई अध्ययनों में यह निष्कर्ष निकाला गया है कि औपनिवेशिक विरासत और उत्तर-औपनिवेशिक शक्ति संरचनाएँ अभी भी वैश्विक निर्णय-प्रक्रियाओं को प्रभावित करती हैं, जिससे पूर्ण समानता का लक्ष्य अधूरा रह जाता है।समग्र रूप से संबंधित साहित्य यह दर्शाता है कि वैश्विक शासन में विकासशील देशों की भूमिका बहुआयामी और गतिशील है। एक ओर वे संस्थागत सुधार, आर्थिक न्याय और सतत विकास के मुद्दों पर नेतृत्व कर रहे हैं, तो दूसरी ओर उन्हें संरचनात्मक बाधाओं और शक्ति असंतुलन से जूझना पड़ रहा है। हाल के अध्ययनों की प्रवृत्ति यह संकेत देती है कि आने वाले वर्षों में वैश्विक शासन की प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर करेगी कि वह विकासशील देशों की भागीदारी को किस हद तक सशक्त, संस्थागत और न्यायपूर्ण बना पाता है।

अनुसंधान उद्देश्य

इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. वैश्विक शासन की वर्तमान संरचना और उसके घटकों को समझना।
2. यह विश्लेषण करना कि विकासशील देशों ने वैश्विक नीतियों और निर्णय प्रक्रियाओं में कैसे योगदान दिया है।
3. प्रमुख वैश्विक संस्थाओं में विकासशील देशों की भागीदारी का अध्ययन करना।
4. वैश्विक शासन में विकासशील देशों के सामने आने वाली चुनौतियों और सीमाओं की पहचान करना।
5. सुझाव देना कि कैसे वैश्विक शासन में विकासशील देशों की प्रभावशीलता और भूमिका को और मजबूत किया जा सकता है।

अनुसंधान पद्धति

यह अध्ययन गुणात्मक अनुसंधान पद्धति पर आधारित है, जिसका उद्देश्य वैश्विक शासन की संरचना में विकासशील देशों की भूमिका को गहराई से समझना और उसके बहुआयामी प्रभावों का विश्लेषण करना है। चूँकि यह विषय केवल सांख्यिकीय प्रवृत्तियों तक सीमित नहीं है, बल्कि नीतिगत विमर्श, शक्ति-संतुलन, वैचारिक दृष्टिकोण और संस्थागत संरचनाओं से भी जुड़ा

हुआ है, इसलिए गुणात्मक दृष्टिकोण को अधिक उपयुक्त माना गया। इस पद्धति के माध्यम से शोध ने घटनाओं, नीतियों और निर्णय-प्रक्रियाओं के संदर्भगत विश्लेषण पर बल दिया है, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि विकासशील देशों की सहभागिता किस प्रकार औपचारिक और अनौपचारिक दोनों स्तरों पर प्रभाव डालती है।अध्ययन में मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। इस संदर्भ में विभिन्न वैश्विक संस्थाओं के आधिकारिक प्रकाशनों का विश्लेषण किया गया। इन दस्तावेजों ने यह समझने में सहायता प्रदान की कि वैश्विक मंचों पर विकासशील देशों की भागीदारी किस प्रकार दर्ज की जाती है और किन मुद्दों पर उनकी प्राथमिकताएँ स्पष्ट रूप से सामने आती हैं। आधिकारिक प्रकाशनों के माध्यम से नीतिगत परिवर्तनों, प्रस्तावों और बहुपक्षीय समझौतों की प्रकृति का तुलनात्मक अध्ययन संभव हुआ।इसके अतिरिक्त, विभिन्न देशों द्वारा जारी नीतिगत दस्तावेजों और श्वेत पत्रों का विश्लेषण किया गया, जिनमें वैश्विक सहयोग, आर्थिक कूटनीति, जलवायु परिवर्तन और सतत विकास लक्ष्यों के प्रति उनकी प्रतिबद्धताओं का उल्लेख है। इन दस्तावेजों से यह स्पष्ट हुआ कि विकासशील देश वैश्विक मंचों पर अपने राष्ट्रीय हितों को किस प्रकार वैश्विक सार्वजनिक हितों के साथ समन्वित करने का प्रयास करते हैं।शोध में समकालीन विद्वानों के लेख और समीक्षित शोध-पत्र भी शामिल किए गए हैं। इन स्रोतों ने सैद्धांतिक और विश्लेषणात्मक आधार प्रदान किया, जिससे यह समझा जा सका कि वैश्विक शासन में शक्ति-संतुलन किस प्रकार परिवर्तित हो रहा है। इन अध्ययनों ने उत्तर-औपनिवेशिक सिद्धांत, बहुपक्षवाद, वैश्विक न्याय और दक्षिण-दक्षिण सहयोग जैसे सैद्धांतिक ढाँचों के माध्यम से विकासशील देशों की भूमिका का विश्लेषण किया है।वार्षिक रिपोर्टों और वैश्विक निर्देशक सूचकों का भी अध्ययन किया गया, जिनमें मानव विकास सूचकांक, वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता सूचकांक, और सतत विकास लक्ष्यों की प्रगति से संबंधित आँकड़े शामिल हैं। इन सूचकों ने विकासशील देशों की वैश्विक स्थिति, आर्थिक क्षमता और सामाजिक प्रगति को समझने का अनुभवजन्य आधार प्रदान किया। यद्यपि यह अध्ययन मुख्यतः गुणात्मक है, फिर भी इन सांख्यिकीय संकेतकों का उपयोग सहायक विश्लेषण के रूप में किया गया, ताकि निष्कर्ष अधिक सुसंगत और यथार्थपरक बन सकें।तुलनात्मक विश्लेषण इस अध्ययन की केंद्रीय पद्धति रही है। इसके अंतर्गत विभिन्न विकासशील देशों की वैश्विक संस्थाओं में भूमिका की तुलना की गई, जैसे कि उभरती अर्थव्यवस्थाओं और कम विकसित देशों के दृष्टिकोण में अंतर। इस तुलना के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया कि कौन-से कारक किसी देश की प्रभावशीलता को बढ़ाते या सीमित करते हैं। उदाहरण के लिए, आर्थिक क्षमता, जनसंख्या आकार, कूटनीतिक अनुभव और क्षेत्रीय गठबंधनों की सदस्यता को महत्वपूर्ण चर के रूप में देखा गया।विश्लेषण में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों को एकीकृत दृष्टिकोण से समझा गया। राजनीतिक कारकों में शासन प्रणाली, विदेश नीति की प्राथमिकताएँ और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सक्रियता को शामिल किया गया। सामाजिक कारकों के अंतर्गत जनसांख्यिकीय संरचना, मानव विकास स्तर और सामाजिक न्याय के मुद्दों को ध्यान में रखा गया। आर्थिक कारकों में व्यापारिक क्षमता, विदेशी निवेश, और वित्तीय स्थिरता का विश्लेषण किया गया, जबकि सांस्कृतिक कारकों के अंतर्गत वैश्विक विमर्श में पहचान, वैचारिक दृष्टिकोण और सभ्यतागत मूल्यों की भूमिका को समझा गया।

इस प्रकार, यह अनुसंधान पद्धति बहुस्तरीय और अंतःविषय दृष्टिकोण पर आधारित है, जो केवल संस्थागत आँकड़ों तक सीमित न रहकर व्यापक वैचारिक और संरचनात्मक संदर्भों को भी समाहित करती है। इससे यह संभव हुआ कि वैश्विक शासन में विकासशील देशों की भूमिका का विश्लेषण एक समग्र, संतुलित और गहन परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया जा सके।

डेटा विश्लेषण एवं व्याख्या

इस अध्ययन के अंतर्गत संकलित द्वितीयक आँकड़ों, नीतिगत दस्तावेजों और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की वार्षिक रिपोर्टों के विश्लेषण से यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि पिछले एक दशक से वैश्विक शासन की संरचना में विकासशील देशों की भागीदारी और प्रभाव में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। यह वृद्धि केवल औपचारिक सदस्यता या प्रतीकात्मक उपस्थिति तक सीमित नहीं है, बल्कि एजेंडा-निर्धारण, प्रस्ताव निर्माण, वार्ता प्रक्रिया और निर्णय-प्रभाव पर भी दिखाई देती है।

उदाहरणस्वरूप, BRICS देशों की नियमित शिखर बैठकों और संयुक्त घोषणापत्रों का विश्लेषण दर्शाता है कि ये देश वैश्विक आर्थिक सुधार, बहुपक्षीय वित्तीय संस्थाओं के पुनर्गठन, जलवायु वित्त और डिजिटल शासन जैसे विषयों पर संगठित दृष्टिकोण प्रस्तुत कर रहे हैं। BRICS के भीतर स्थापित न्यू डेवलपमेंट बैंक जैसी पहलों ने यह संकेत दिया है कि विकासशील देश

केवल मौजूदा संस्थागत ढाँचों पर निर्भर नहीं रहना चाहते, बल्कि वैकल्पिक वित्तीय संरचनाएँ भी विकसित कर रहे हैं। इससे वैश्विक आर्थिक शासन में शक्ति के पुनर्वितरण की प्रक्रिया प्रारंभ हुई है।संयुक्त राष्ट्र महासभा के एजेंडों का विश्लेषण यह दर्शाता है कि विकास-उन्मुख प्रस्तावों, विशेषकर सतत विकास, जलवायु न्याय, खाद्य सुरक्षा और गरीबी उन्मूलन से जुड़े प्रस्तावों की संख्या में वृद्धि हुई है। इन प्रस्तावों में अधिकांश का समर्थन विकासशील देशों के समूहों द्वारा किया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि वैश्विक विमर्श में उनके मुद्दों को केंद्रीय स्थान मिल रहा है। इसी प्रकार वैश्विक संसदीय मंचों और बहुपक्षीय सम्मेलनों में विकासशील देशों के प्रतिनिधित्व में वृद्धि ने नीति-निर्माण की दिशा को अधिक समावेशी बनाया है।अस्थायी सदस्यों के रूप में विकासशील देशों की सक्रियता ने शांति स्थापना अभियानों, मानवीय हस्तक्षेप और संघर्ष समाधान के एजेंडों को प्रभावित किया है। यद्यपि स्थायी सदस्यता की संरचना अभी भी शक्ति असंतुलन को दर्शाती है, फिर भी अस्थायी सदस्यों के रूप में विकासशील देशों ने क्षेत्रीय दृष्टिकोण और वैश्विक दक्षिण के हितों को अधिक मुखर रूप से प्रस्तुत किया है।आर्थिक निर्णयों का अध्ययन दर्शाता है कि वैश्विक वित्तीय स्थिरता, ऋण राहत और विकास वित्त के मुद्दों पर विकासशील देशों की आवाज़ को अनदेखा करना संभव नहीं रहा है। कोविड-19 महामारी के बाद ऋण पुनर्गठन और आपातकालीन वित्तीय सहायता के संदर्भ में अफ्रीकी और एशियाई देशों की मांगों को एजेंडे में शामिल किया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि वैश्विक आर्थिक शासन अब केवल विकसित देशों की प्राथमिकताओं पर आधारित नहीं है, बल्कि व्यापक प्रतिनिधित्व की दिशा में अग्रसर है।बौद्धिक संपदा अधिकारों में लचीलापन, कृषि सब्सिडी और विशेष व भेदभावपूर्ण व्यवहार जैसे मुद्दों पर विकासशील देशों ने सामूहिक रणनीति अपनाई है। इन प्रयासों ने व्यापार वार्ताओं को अधिक संतुलित बनाने की दिशा में योगदान दिया है, यद्यपि अंतिम परिणाम अभी भी जटिल और बहसपूर्ण हैं।

महामारी प्रबंधन और वैक्सीन वितरण के मुद्दों पर विकासशील देशों की भागीदारी ने वैश्विक नीति-निर्माण में समानता और न्याय के प्रश्न को केंद्र में ला दिया। कोविड-19 के दौरान वैक्सीन समानता, आपूर्ति श्रृंखला की पारदर्शिता और पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों, जैसे आयुर्वेद, के वैज्ञानिक मूल्यांकन को बढ़ावा देने में विकासशील देशों ने सक्रिय भूमिका निभाई। इस प्रक्रिया ने वैश्विक स्वास्थ्य शासन को अधिक बहु-सांस्कृतिक और समावेशी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए।समग्र रूप से डेटा विश्लेषण यह संकेत देता है कि विकासशील देशों की भूमिका बहुआयामी है। वे केवल नीति-उपभोक्ता नहीं रहे, बल्कि नीति-निर्माता और एजेंडा-निर्धारक के रूप में उभरे हैं। आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों पर उनकी सक्रिय भागीदारी ने वैश्विक शासन की संरचना को अधिक लोकतांत्रिक और संतुलित बनाने की दिशा में योगदान दिया है। साथ ही, यह भी स्पष्ट होता है कि प्रभाव की यह वृद्धि अभी पूर्ण समानता में परिवर्तित नहीं हुई है, परंतु परिवर्तन की दिशा स्पष्ट रूप से विकासशील देशों के पक्ष में अग्रसर है।

चर्चा

इस अध्ययन के समग्र विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि वैश्विक शासन में विकासशील देशों की भूमिका अब प्रारंभिक या प्रतीकात्मक अवस्था में नहीं है, बल्कि वह एक परिपक्व और प्रभावकारी स्वरूप ग्रहण कर चुकी है। पिछले दशक में वैश्विक राजनीतिक और आर्थिक परिदृश्य में आए परिवर्तनों ने यह स्थापित किया है कि विकासशील देश केवल नीतियों के अनुपालनकर्ता नहीं हैं, बल्कि वे एजेंडा-निर्धारण, वार्ता-प्रक्रिया और संस्थागत सुधारों में सक्रिय भागीदारी निभा रहे हैं। बहुपक्षीय मंचों पर उनकी उपस्थिति अब मात्र संख्या तक सीमित नहीं रही, बल्कि वह वैचारिक दिशा और निर्णयों की प्राथमिकताओं को भी प्रभावित कर रही है।इसके बावजूद चुनौतियाँ अब भी विद्यमान हैं। संसाधनों की कमी एक प्रमुख बाधा है, क्योंकि वैश्विक कूटनीति, अनुसंधान क्षमता और संस्थागत प्रतिनिधित्व के लिए पर्याप्त वित्तीय एवं तकनीकी साधनों की आवश्यकता होती है। कई विकासशील देशों के पास विशेषज्ञता और स्थायी कूटनीतिक नेटवर्क की सीमित उपलब्धता है, जिससे वे दीर्घकालिक नीति-निर्माण में उतनी निरंतरता नहीं रख पाते जितनी विकसित देश रखते हैं। इसके अतिरिक्त, वैश्विक संस्थाओं की संरचना में निहित शक्ति-असंतुलन भी एक गंभीर चुनौती है। वैश्विक निर्णय-निर्माण प्रक्रियाओं तक पूर्ण पहुँच का अभाव भी एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा है। यद्यपि संस्थाओं में विकासशील देशों की सदस्यता व्यापक है, फिर भी मतदान संरचना, वित्तीय योगदान और ऐतिहासिक प्रभाव के कारण विकसित देशों का वर्चस्व अधिक दिखाई देता है। इस असमानता के कारण कई बार

विकासशील देशों के प्रस्तावों को पर्याप्त समर्थन प्राप्त करने में कठिनाई होती है।फिर भी, संगठनात्मक नेटवर्क और सामूहिक मंचों ने विकासशील देशों की प्रभावशीलता को उल्लेखनीय रूप से सुदृढ़ किया है। BRICS जैसे समूहों ने सामूहिक रणनीति के माध्यम से वैश्विक मंचों पर साझा नीति-सुझाव प्रस्तुत किए हैं। इन संगठनों की विशेषता यह है कि वे विविध राजनीतिक और आर्थिक पृष्ठभूमि वाले देशों को एक साझा एजेंडा पर एकत्रित करते हैं। इस प्रकार सामूहिक वार्ता-शक्ति के माध्यम से वे अपने हितों को अधिक प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर पाते हैं। जलवायु परिवर्तन, ऋण राहत, डिजिटल संप्रभुता और सतत विकास जैसे मुद्दों पर इन समूहों ने एक वैकल्पिक विमर्श स्थापित किया है, जिसने वैश्विक नीति-निर्माण की दिशा को प्रभावित किया है।यह भी देखा गया है कि विकासशील देशों का नेतृत्व अब केवल क्षेत्रीय मुद्दों तक सीमित नहीं है, बल्कि वे वैश्विक सार्वजनिक वस्तुओं, जैसे जलवायु स्थिरता, स्वास्थ्य सुरक्षा और खाद्य आपूर्ति श्रृंखला की स्थिरता, पर भी सक्रिय दृष्टिकोण अपना रहे हैं। कोविड-19 महामारी के दौरान वैश्विक दक्षिण के देशों ने वैक्सीन समानता और आपूर्ति न्याय के प्रश्न को अंतरराष्ट्रीय एजेंडे में प्रमुखता से स्थापित किया। इस प्रकार उनका नेतृत्व नैतिक वैधता और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों पर आधारित दिखाई देता है।

2. निष्कर्ष

अध्ययन के निष्कर्ष यह इंगित करते हैं कि वैश्विक शासन में विकासशील देशों की भूमिका अब केवल वैचारिक आकांक्षा या प्रतीकात्मक उपस्थिति तक सीमित नहीं है, बल्कि वह वास्तविक और प्रभावकारी स्वरूप ग्रहण कर चुकी है। वैश्विक नीतियों, आर्थिक नियमों और बहुपक्षीय निर्णय-प्रक्रियाओं में उनकी भागीदारी ने अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को अधिक संतुलित और समावेशी बनाने में योगदान दिया है। विकासशील देशों ने समानता, सामाजिक न्याय, आर्थिक सुधार और सामूहिक विकास के मुद्दों को लगातार उठाकर वैश्विक विमर्श को मानवीय और विकासोन्मुख दिशा प्रदान की है।हालाँकि संरचनात्मक असमानताएँ और संसाधन संबंधी चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं, फिर भी उनकी बढ़ती भागीदारी और नेटवर्क आधारित सहयोग ने शक्ति-संतुलन की पारंपरिक धारणाओं को चुनौती दी है। सामूहिक नेतृत्व, क्षेत्रीय एकजुटता और बहुपक्षीय सक्रियता के माध्यम से विकासशील देश वैश्विक शासन की प्रकृति को पुनर्परिभाषित कर रहे हैं। इससे यह संकेत मिलता है कि भविष्य का वैश्विक शासन अधिक बहुध्रुवीय, विविध और न्यायसंगत होगा, जिसमें निर्णय-निर्माण की प्रक्रिया व्यापक प्रतिनिधित्व और साझी जिम्मेदारी पर आधारित होगी।

संदर्भ

1. Sharma, A. (2020). वैश्विक शासन और उभरती अर्थव्यवस्थाएँ: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन. अंतरराष्ट्रीय राजनीति पत्रिका, 14(2), 67–84.
2. Verma, S. (2021). बहुपक्षवाद और विकासशील देशों की भूमिका. वैश्विक अध्ययन जर्नल, 7(3), 112–130.
3. Patel, D. (2022). G20 में वैश्विक दक्षिण की भागीदारी. अंतरराष्ट्रीय आर्थिक समीक्षा, 21(1), 88–105.
4. Johnson, L. (2020). Reforming Global Financial Institutions: Voice of the Global South. International Economic Policy Review, 11(4), 201–219.
5. Singh, P. (2023). जलवायु न्याय और विकासशील देश. पर्यावरण एवं वैश्विक नीति जर्नल, 6(2), 45–63.
6. Wang, Y. (2021). Emerging Powers and Multilateral Governance. Global Affairs, 5(3), 144–162.
7. Khan, M. (2022). WTO Negotiations and Developing Economies. Journal of Trade and Development, 10(2), 77–94.
8. Rao, N. (2024). वैश्विक स्वास्थ्य शासन में विकासशील देशों की भूमिका. स्वास्थ्य नीति समीक्षा, 8(1), 23–41.
9. Brown, T. (2023). Power Asymmetry in Global Governance Structures. International Relations Quarterly, 19(2), 150–169.
10. Das, R. (2021). दक्षिण-दक्षिण सहयोग: अवसर और चुनौतियाँ. विकास अध्ययन पत्रिका, 12(4), 98–117.
11. Garcia, M. (2022). Inclusive Global Governance and Policy Transformation. World Policy Analysis, 13(3), 210–228.
12. Mukherjee, K. (2020). United Nations Reform and Developing Countries. Global Governance Review, 16(1), 35–52.
13. Ali, H. (2023). Debt Relief and Developing Nations in the Post-Pandemic Era. International Development Studies, 9(4), 178–196.
14. Choudhary, V. (2024). वैश्विक आर्थिक व्यवस्था में ब्रिक्स की भूमिका. समकालीन अंतरराष्ट्रीय अध्ययन, 5(2), 60–79.
15. Fernandez, R. (2021). Democratic Representation in Global Institutions. Journal of International Governance, 14(3), 121–139.